निर्णय रिपोर्ट और निवेदन कूपन

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा करने के बाद, ...' मैंने प्रभु यीशु मसीह में अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु जानकर विश्वास किया है। मैं अपने हस्ताक्षर करके व पता लिखकर यह कूपन लौटा रहा/रही हूं, जिसके दो कारण हैं। पहिला, मसीह के प्रति अपने समर्पण की साक्षी हूं, दूसरा, अपने आत्मिक जीवन में सहायता पाने हेतु और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकूं।

नाम _____

पूरा पता .....

.....

हस्ताक्षर _____

इन्टरनेंशनल कारिसपॉन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स 303
लखनऊ-226 001

कृपया नीचे दिए गये खाली स्थानों की पूर्ति साफ अक्षरों में भरें :—

आपका नाम .....
आपका आई॰ सी॰ आई॰ छात्र संख्या .....
आपका पता .....
.....
पिन कोड ..... प्रांत .....
उम्र ..... लिंग ..... धर्म .....
व्यवसाय ..... दिनांक .....

हमारा विश्वास

पाठ १—८

सही या गलत

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

१ बाइबल किसी दूसरी महान पुस्तक से भिन्न नहीं है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

२ परमेश्वर करुणामय, किन्तु न्याय एवं सत्य से परिपूर्ण भी है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

३ मनुष्य करोड़ों वर्षों के विकास का निष्कर्ष है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

४ यीशु इस समय हमारे लिए पिता से प्रार्थना कर रहा है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

५ परमेश्वर एक मसीही को पाप करने के लिए बहुधा परीक्षाएं डालता है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

६ अनन्तकाल के पहिले ही हमें उद्धार का निश्चय हो जाता है।
... (अ) सही .... (ब) गलत

७ कलीसिया मसीह के साथ सर्वदा रहेगी।
... (अ) सही .... (ब) गलत

बहुसंख्यक चुनाव

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

८ बाइबल का कौन सा भाग परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है?
..... (अ) केवल पुराना नियम
..... (ब) केवल नया नियम
..... (स) पुराना एवं नया नियम, दोनों

९ इनमें से कौन सी बात बाइबल का उद्देश्य नहीं है।
..... (अ) हमारा मनोरंजन करना
..... (ब) हमारे पापों को दर्शाना
..... (स) यह सिखाना कि आपस में कैसा व्यवहार करना चाहिए।

१० हमें परमेश्वर की अराधना...

..... (अ) एक सुन्दर मन्दिर में करनी चाहिए
..... (ब) आत्मा और सच्चाई से करनी चाहिए
..... (स) जैसा कि हमें अच्छा लगे वैसा करना चाहिए

११ परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की

..... (अ) सिद्ध
..... (ब) पापी स्वभाव में
..... (स) आत्मा में कमजोर

१२ पाप का निष्कर्ष क्या है?

..... (अ) मृत्यु
..... (ब) जीवन
..... (स) कोई प्रभाव नहीं

१३ दूसरों से ईर्ष्या रखना पाप है क्योंकि यह

..... (अ) हमें समस्या में डाल सकती है।
..... (ब) हमारी प्रतिष्ठा को चोट पहुंचा सकती है।
..... (स) परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करना है।

१४ हम पाप के दण्ड से बच सकते हैं केवल

..... (अ) कलीसिया को बड़ी मात्रा में पैसे देने के द्वारा
..... (ब) यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने के द्वारा
..... (स) अपनी प्रार्थनाओं को प्रति दिन दुहराने के द्वारा।

१५ यीशु के नाम का अर्थ

..... (अ) "अभिषिक्त जन"
..... (ब) "मसीहा"
..... (स) "बचाने वाला"

१६ मसीहा नाम का अर्थ

..... (अ) "उद्धारकर्त्ता
..... (ब) "परमेश्वर का पुत्र
..... (स) "अभिषिक्त जन"

१७ पवित्रीकरण का अर्थ

..... (अ) परमेश्वर की आत्मा के द्वारा नया जन्म प्राप्त करना है।
..... (ब) पवित्र बनना एवं परमेश्वर के कार्य के लिए अलग होना है
..... (स) धर्मी बनाया जाना जैसा कभी पाप किया ही न हो

१८ जब हम नया जीवन प्राप्त कर लेते हैं तो कौन सी बात नहीं होती?

..... (अ) हम सीधे स्वर्ग पहुंच जाते हैं
..... (ब) हम नए सृष्टि बन जाते हैं
..... (स) हम परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाते हैं।

१९ बाइबल में कलीसिया को

..... (अ) यीशु की देह का सिर कहा गया है
..... (ब) मसीह की दुल्हन कहा गया है
..... (स) इमारत के कोने के सिरे का पत्थर कहा गया है।

पाठ ९-१६

सही गलत

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें

२० शैतान हमेशा से मनुष्यों को धोखा देने वाला रहा है।
... (अ) ... (ब) गलत

२१ यीशु ने कहा कि संसार उसके वापस आने से पहले उन्नति कर चुकेगा।
... (अ) ... (ब) गलत

२२ परमेश्वर हमें अनुग्रह देता है कि उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकें।
... (अ) ... (ब) गलत

२३ हम उद्धार एवं चंगाई विश्वास से प्राप्त करते हैं।
... (अ) ... (ब) गलत

२४ हमारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है।
... (अ) ... (ब) गलत

२५ गंदी पत्रिकाओं के पढ़ने से मसीहिओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
... (अ) ... (ब) गलत

२६ यीशु ने दशमांश के महत्व को स्वीकार किया।
... (अ) ... (ब) गलत

बहुसंख्यक चुनाव

प्रत्येक प्रश्न का केवल एक ही उत्तर है।

(√) सही उत्तर के सामने सही चिन्ह अंकित करें।

२७ शैतान के विषय में कौन सा कथन सही नहीं है?

..... **(अ) वह विश्वासियों से दूर रहता है।**

..... (ब) वह मसीहियों को पाप करने का प्रलोभन देता है।

..... (स) उसने अपने को परमेश्वर से ऊंचा उठने की कोशिश की।

२८ मेम्ने का विवाह-भोज

..... **(अ) यीशु का पृथ्वी पर राज्य करने के लिए वापस आने के बाद होगा।**

..... (ब) सन्तों (विश्वासियों) के बादलों में उठा लिए जाने के बाद होगा।

..... (स) महान-श्वेत-सिंहासन-न्याय के बाद होगा।

२९ मसीह के न्याय सिंहासन के सामने कौन होगा?

..... (अ) विश्वासी लोग

..... (ब) शैतान और उसके दूत

..... (स) पापी

३० महान श्वेत सिंहासन-न्याय कब होगा?

..... (अ) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के पहले

..... (ब) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के समय

..... (स) यीशु का एक हजार वर्ष के राज्य के बाद

३१ परमेश्वर की आज्ञाएं इसलिए दी गई कि

..... (अ) मनुष्य जीवन का आनन्द न ले सके

..... (ब) मनुष्य को पाप से बचाया जा सके।

..... (स) मनुष्य को बुराई से भलाई की ओर ले चलें

३२ हमें परमेश्वर की आज्ञा पालन करनी चाहिए

..... (अ) क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं एवं उसे खुश रखना चाहते हैं।

..... (ब) ताकि उद्धार प्राप्त कर सकें।

..... (स) जब तक उद्धार प्राप्ति न हो।

३३ मत्ती ७:२१ के अनुसार स्वर्ग में कौन प्रवेश करेगा?

..... (अ) प्रत्येक जो प्रार्थना करता है।

..... (ब) जो पाप की मुआफी के लिए पैसे देता है।

..... (स) जो परमेश्वर की आज्ञा मानता है।

३४ एक मसीही

..... (अ) को स्वयं निर्णय लेने का अधिकार है

..... (ब) पवित्रता की चिन्ता नहीं करनी चाहिए

..... (स) अपने से अधिक मसीह को प्रसन्न रखेगा।

३५ कौन सी बात सही नहीं है? हमारे विचार

..... (अ) हमारे व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं।

..... (ब) हमारे व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं डालते

..... (स) सावधानी पूर्वक सुरक्षित रहने चाहिए।

३६ यदि कोई आपसे झूठ बोले तो आपको चाहिए कि

..... (अ) उसे माफ करके उससे प्रेम रखें

..... (ब) उससे बदला लें

..... (स) उसे दूसरों को बताएं

३७ इनमें आत्मा के वरदान कौन से हैं?

..... (अ) आनन्द, मेल, भलाई, नम्रता, धीरज

..... (ब) भविष्यवाणी, विश्वास, ज्ञान की बातें

..... (स) संयम, प्रेम, कृपा, एवं धीरज

३८ हम पवित्रात्मा की भरपूरी को बनाए रखते हैं

..... (अ) सांसारिक मनोरंजन के द्वारा

..... (ब) शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करने के द्वारा

..... (स) मसीह की आज्ञाओं का पालन एवं परमेश्वर पर भरोसा रखने के द्वारा।

हमारा विश्वास

निर्णय प्रतिवेदन एवं निवेदन पत्र

"हमारा विश्वास" पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् मैंने अपना भरोसा यीशु पर अपने उद्धार कर्त्ता और प्रभु के रूप में डाल दिया है। मैं यह पत्र अपने हस्ताक्षर एवं पता के साथ नीचे लिखे आई० सी० आई० के पते पर दो कारणों से भेज रहा हूं। प्रथम, यीशु पर अपने समपर्ण की साक्षी एवं द्वितीय, मेरे आत्मिक जीवन के लाभ के लिए अधिक जानकारी के निवेदन हेतु।

नाम .....

पता .....

हस्ताक्षर .....

छात्र संख्या .....

यदि आपने यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया हो तो कृपया संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

इन्टरनेशनल कारिसपॉन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बाक्स 303
लखनऊ-226 001

क्या आप जानना चाहते हैं कि...

- **परमेश्वर एवं मनुष्य के विषय में?**
- **उद्धार कैसे प्राप्त होता है?**
- **आत्मिक जीवन का विकास कैसे होता है?**
- **पवित्र आत्मा के विषय में और अधिक**

क्या आप दूसरों को बता सकते हैं कि आप क्या एवं क्यों विश्वास करते हैं? क्या उन्हें बता सकते हैं कि बाईबिल उद्धार के विषय में क्या कहती है? क्या आप नए मसीहियों की सहायता करना चाहेंगे? हमारा विश्वास आपकी आवश्यकता की एक पुस्तक है। इसके प्रश्न उत्तर एवं मुखाग्र कार्य आपके आत्मिक बढ़ती में सहायक होंगे।

इसकी रुचिकर स्वयं-शिक्षणा-विधि आपके अध्ययन को सरल बना देती है। आप केवल निर्देशन का पालन करें एवं आगे बढ़ते हुए अपने को जांचें।

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बॉक्स-303 लखनऊ-226 001